❖ अमरावती, गुरुवार ३० जनवरी से ५ फरवरी २०२५ ❖ वर्ष १५ ❖ अंक ३२ मूल्य १०/- पृष्ठ ८ ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2025-2027 डाक : शुक्रवार – शनिवार

विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र जे. दुबे | प्रबंधक : सौ. वीणा एस. दुबे

विशेषांक

E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com

बाबूजी के आदर्श

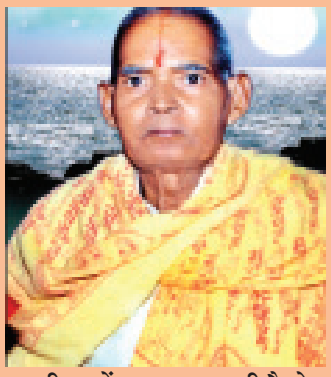

जीवन में अगर आप सही है तो किसीसे भी झुकने की जरुरत नहीं होती है. स्वयं की गलतियों का पता चलना मुश्कील होता है. लेकिन चिंतन और मौन से इस कमी को दुर किया जा सकता है.

लाखों समर्पित कार्यकर्ताओं में एक हैं हमारे सुदर्शनजी

भारतीय जैन संगठन के संस्थापक प्रमुख शांतिलाल मुथा ने कहा निष्ठा, सेवा तथा समर्पण के त्रिसूत्री व्यक्तित्व

विदर्भ स्वाभिमान अमरावती

जीवन में कुछ ही लोग ऐसे होते हैं, जिनके प्रति दिल में सम्मान स्वयं ही पैदा होता है, ऐसे ही लोगों में हैं सुदर्शन गांग. निष्ठा, सेवा और सोंपी गई जिम्मेदारी पूरे समर्पण भाव से निभाने वाले तथा समर्पित व्यक्तित्व के रूप में भारतीय जैन संगठन के विश्वस्त सुदर्शन गांग का उल्लेख किया जा सकता है. संगठन ने पिछले ३५ वर्षों से उन पर जो भी जिम्मेदारी सौंपी, उसे सोना करने और पूरे समर्पण से उसे पूरा किया है. सेवाभाव, समर्पण के साथ ही पूरी निष्ठा उनकी खूबी है. यही कारण है कि उन्हें हजारों में एक कहना गलत नहीं होगा. इन शब्दों में भारतीय जैन संगठन के संस्थापक और सेवाभाव का मायना बदलने वाले शांतिलालजी मुथा ने उनके प्रति अपनी भावनाएं व्यक्त करते हुए जन्मदिन की मंगलमय शुभकामनाएं दी.

श्वेता दुबे
अमरावती

सुदर्शनजी गांग संगठन में जिलाध्यक्ष से लेकर विश्वस्त के रूप में उनका कार्य सराहनीय है. संगठन के लाखों कार्यकर्ताओं में अगर मुझे पांच सर्वोत्तम कार्यकर्ताओं का चयन करने के लिए कहा जाए तो उसमें भी पहला नाम उनका रहेगा. इन शब्दों में भारतीय जैन संगठन के संस्थापक अध्यक्ष शांतिलाल मुथा ने सुदर्शन गांग के कार्यों की सराहना की. संगठन के प्रति उनकी निष्ठा, सौंपी गई जिम्मेदारी शतप्रतिशत से अधिक निभाने की चाहत और प्रयास के साथ ही सभी को साथ लेकर चलने, सम्मान देने की अदा ही अलग है. २ फरवरी को बाबूजी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में विदर्भ स्वाभिमान द्वारा संपर्क किए जाने पर भेजे गए वीडियो संदेश में अभी तक हजारों गरीब, अनाथ, आदिवासी बच्चों का जीवन संवारने वाले शांतिलाल मुथा ने कहा कि संगठन के जिलाध्यक्ष, विभागीय अध्यक्ष, प्रदेश पदाधिकारी, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य पर बेहतरीन कार्य करते हुए संगठन के महत्वपूर्ण विश्वस्त के रूप में वर्तमान में अंडमान निकोबार से लेकर देश के १५ राज्यों में उन्होंने कार्य किया है. पर्यावरण संतुलन, छात्रों का मार्गदर्शन, भूकंप जैसी आपदा में बचाव कार्य जैसे कार्यों में उनकी सक्रियता और समर्पण अनुकरणीय होता है. २ फरवरी को उनके जन्मदिन में शामिल होने की दिल से इच्छा रहने के बावजूद अत्याधिक व्यवस्तता के कारण अमरावती आकर उन्हें जन्मदिन की शुभकामना देना भले ही संभव नहीं है लेकिन उनके साथ व्यक्तिगत, पारिवारिक ऐसे संबंध बन गए हैं कि उनका

(शेष पेज ३ पर)

संपादकीय .....

जिंदगी में पद नहीं अपना कद बढ़ाओ

कहते हैं कि हम नाहक ही हर काम का श्रेय लेते हैं. जबकि सच्चाई यह है कि हम पिता हैं लेकिन प्रभु तो परमपिता हैं. हमारा कर्म अगर अच्छा है तो वह कहीं से भी बचा लेते हैं. कर्म का सिद्धांत न्यारा होता है. इसे ही तो जिंदगी कहते हैं.

एक बार की बात है, एक जंगल में एक हिरणी बच्चे को जन्म देने वाली थी.लेकिन वहां पास में ही एक बाघ बैठा हुआ उसे देख रहा है.एक तरफ एक शिकारी बंदूक तानकर खड़ा है. और पास में ही जंगल में आग जल रही है.उसे पूरा विश्वास है कि चारों ओर से आने वाले इन संकटों में से कोई न कोई संकट उसे निगल ही जाएगा.वह शिकारी बंदूक से गोली चलाता है.बाघ जोर से छलांग लगाता है. और फिर बिजली चमकती है.शिकारी का ध्यान आकर्षित होता है... और गोली बाघ को लगती है... बिजली चमकती है, गरजती है, और बारिश शुरु हो जाती है... इस प्रकार जंगल की आग बुझ

जाती है..! और जब ये सब हो रहा होता है, तभी हिरणी धीरे-धीरे एक छोटे बच्चे को जन्म देती है.

हमारा जीवन भी कुछ ऐसा ही होता है. उसके हाथ में कुछ भी नहीं है.हम तो इस बिसात पर सिर्फ मोहरे हैं.कर्ता तो ईश्वर है.जब इस तरह के विचार आते रहते हैं, तो कोई नहीं कह सकता कि किस क्षण क्या हो जाएगा.वही मारता है और वही बचाता है. कर्म का सिद्धांत कितना भी सत्य क्यों न हो, शेक्सपियर का एक वाक्य बहुत कुछ कह देता है.

हर दुर्भाग्य के पीछे एक अपराध छिपा होता है... लेकिन हर अपराध के पीछे एक दुर्भाग्य छिपा होता है...!जिंदगी ऐसी ही है... किसको दोष दें और किसकी तारीफ करें.. दोनों एक ही रथ के पहिए हैं. वह ही तय करता है कि वह किस गड्ढे में गिरेगा और किस संकट में फंसा रहेगा.वह समुद्र में डूबकर मर गया...लेकिन उस समय उसके मन में समुद्र की ओर क्या आकर्षण हुआ? कौन बताएगा?चालीस घरों के मलबे के नीचे दबा एक छह महीने का बच्चा ३० घंटे बाद भी उतनी ही खूबसूरती से मुस्कुराता और खेलता हुआ पाया गया. उस ढेर में भी कौन उसे अपनी गोद में लिया था, यह हमारी सोच के बाहर है.

एक सामान्य सड़क पर चलती हुई बस एक दिन अचानक घाटी में गिर जाती है. कौन उसे घाटी में धकेलेगा? हवा? या ड्राइवर? या फिर ड्राइवर की आंखों के सामने अचानक छा गया अंधेरा? कौन बताएगा? एक लड़के की रोजाना की ट्रेन में बम धमाका होता है. लेकिन वह उस दिन ऑफिस भी नहीं गया, इससे वह बच गया.आखिर उसे कार्यालय नहीं जाने की प्रेरणा क्यों दी.वह उस दिन कार्यालय जाने से क्यों बचना चाहता था? कौन बताएगा?

उस हिरणी के बच्चे के जन्म पर अचानक बिजली क्यों चमकी?कौन बताएगा? कौन बताएगा? किसी को भी नहीं.ऐसा ही है... भक्ति में निहित... प्रेम से पुनर्जीवित... आसक्ति में डूबा हुआ... कर्म के चक्र में फंसा हुआ

भगवान ने लिखा है... हमारा जीवन...! मोर नाचते हुए भी रोता है..और.. हंस मर कर भी गाता है. दुःख की रात में कोई सो नहीं सकता. और कोई भी खुशी के मारे सोता नहीं.इसे ही जीवन कहते हैं.

जीवन कितना लम्बा है? जो आज है वह कल नहीं रहेगा,तो फिर अपनी जिंदगी हंसी और मस्ती के साथ जियो क्योंकि इस दुनिया में कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा. भाग्य द्वारा दी गई स्थिति का दुरुपयोग मत करो.किसी का अपमान मत करो और किसी को कम मत आंको.आप बहुत शक्तिशाली होंगे,

लेकिन समय आपसे ज्यादा शक्तिशाली है. कोई कितना भी महान क्यों न हो,लेकिन प्रकृति कभी किसी को भी उसके योग्य से अधिक महान बनने का अवसर नहीं देती.अपने प्रति कभी अहंकार मत करो.भगवान ने आप और मेरे जैसे कितने लोगों को मिट्टी से बनाया और पुनः मिट्टी में मिला दिया.

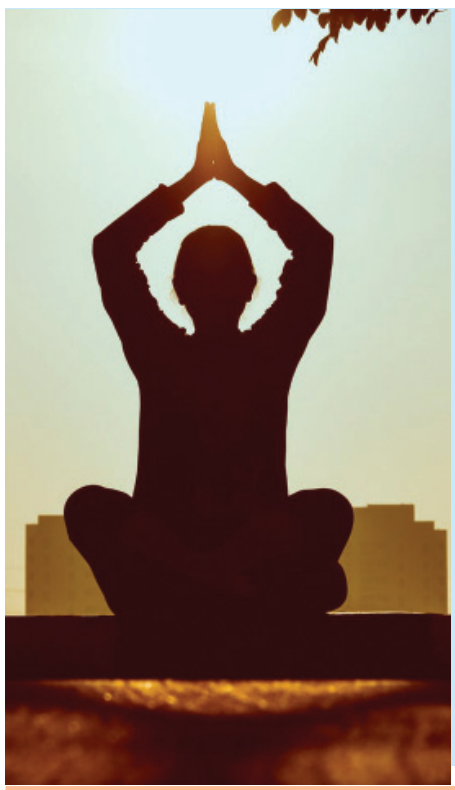

जीवन है बेस्ट, मत करो वेस्ट

प्रभु ने मानव जीवन देकर किया अनंत उपकार...

प्रभु ने मानव जीवन देकर हम पर अनंत उपकार किया है, यह एक ही बार मिलता है. ऐसे में हमारा फर्ज बनता है कि हम स्वयं को दुनिया में गेस्ट समझें लेकिन कई लोग स्वयं को बहुत बड़ा समझ लेते हैं और अपना जीवन अपने ही हाथों खराब कर देते हैं. जीवन तो प्रभु ने बेस्ट दिया है लेकिन हमने अपनी वजह से उसे वेस्ट किया है. जीवन को सेवा, परमार्थ और किसी की खुशियों का कारण बनने में जो लोग लगाते हैं, उनका ही जीवन बेस्ट कहा जा सकता है. लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज हम मेरा-मेरा करते हुए जीवन गंवा देते हैं और इसे नष्ट कर देते हैं. करोड़ों लोग दुनिया में हर दिन पैदा होते हैं लेकिन मानवता की सेवा के मामले में इसमें बहुत कम लोगों का भाग्य ही दिखाई देता है. जीवन में कई लोग तो दुनिया को अपनी जागीर समझ लेते हैं. जबकि सच्चाई यह है कि जमीन का एक टुकड़ा भी सौ साल से अधिक एक मालिक को नहीं झेलता है. जो दादा का था, पिता का हुआ, बाद में बेटे का फिर उसके बेटे की परम्परा चलती रहती है.

ऐसे में हमें अभिमान रहित होकर उस काम को करने का प्रयास करना चाहिए, जो हमारे मन को भी प्रसन्नता देने का काम करे. कहते हैं जीवन टेस्ट है, खुशियां रेस्ट हैं, इस दौर में परमात्मा पर भरोसा नहीं करते हुए ज्यादा सोचना वेस्ट है. हम यह भूल जाते हैं कि इस संसार में हम ही तो गेस्ट हैं लेकिन हम इसका स्वयं को ही मालिक मान लेते हैं. जीवन में जब हम दूसरों को खुशियां देने का प्रयास करते हैं तो वह खुशियां पलटकर हमारे पास आती हैं. सदैव स्वयं भी खुश रहें और औरों को भी खुशियां देते हुए प्रसन्न रखने का प्रयास करें. जो लोग जीवन में ऐसा कर पाते हैं, उनका ही जीवन बेस्ट कहा जा सकता है. लोग आज के दौर में अपनों के भी नहीं होते हैं, माता-पिता के नहीं होते हैं, ऐसे में किसी से अपेक्षा कर स्वयं को सताने की बजाय बिना अपेक्षा के स्वयं की खुशियां ढूंढे और अन्यों को भी खुश रखने का प्रयास करें, फिर देखो, जीवन किस तरह से बेस्ट हो जाएगा.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881
मोबाइल नं.-*09423426199,8855019189/8208407139*
E-Mail-vidarbhswabhiman@gmail.com | www.vidarbhswabhiman.com

सौजन्यता,आत्मीयता की प्रतिमूर्ति हैं

प्राचार्य संजय शिरभाते
मोबाइल नं. ९४२०२३७२८१

समाजसेवा,धर्मसेवा, गरीब बच्चों की मदद, दिव्यांग सेवा के साथ ही मानवता की सेवा में पूरी तरह से समर्पित सुदर्शन गांग सौजन्यता के साथ ही आत्मीयता की प्रतिमूर्ति हैं. वे बोलने में कम और करने में अधिक विश्वास करते हैं. हर व्यक्ति को किस तरह सम्मान देना चाहिए, यह उनसे सीखा जा सकता है. पिछले २० साल से अधिक समय से उनके साथ रहने से बहुत कुछ सीखने मिला है.

जिस तरह से सागर गहरा होने के बाद भी शांत होता है, उसी तरह कुछ लोग भी होते हैं, जिनकी ऊंचाई रहने के बाद भी विनम्रता उन्हें अपार सम्मान दिलवाती है. ऐसे ही लोगों में हैं हमारे मार्गदर्शक, सहयोगी और सामाजिक कामों में अग्रणी सुदर्शन गांग. किसी की बात को गंभीरता से सुनना और उस पर समझ के साथ राय व्यक्त करने की उनकी खूबी अनुकरणीय है. वे जहां सभी को साथ में लेकर चलने में विश्वास रखते हैं, वहीं दूसरी ओर ईमानदारी, सच्चाई जैसे तत्वों को जीवन का सिद्धांत बना लिया है.

भारतीय जैन संगठन के राष्ट्रीय पदाधिकारी, बीजेएस रत्न सहित कई दर्जन पुरस्कारों से नवाजे गए और इतने ही संगठनों के पदाधिकारी रहने वाले सुदर्शन गांग आत्मीयता और प्रेम के महासागर कहे जा सकते हैं. उनकी दूरदृष्टि, उनका विजन, मानव सेवा को लेकर उनकी सोच सहित अनगिनत खूबियों का उन्हें महासागर कहना गलत नहीं होगा. अपनापन तो ऐसा है कि पहली मुलाकात में ही वे सामने वाले को प्रभावित कर अपना बना लेते हैं. मानव सेवा के साथ ही अभिनंदन अर्बन को-आपरेटिव बैंक के प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष के साथ ही जो भी जिम्मेदारी उन्हें दी जाती है, उसमें उनका समर्पण सभी को प्रभावित करता है. मानवता, प्रेम, अपनापन, सेवाभाव, दूसरों को सम्मान देने के साथ ही आत्मीयता से दिल जीतने का मैग्नेटिक पॉवर उनमें है, इसका दर्शन सभी स्थानों पर सहजता से किया जा सकता है. सफलतम व्यवसायी, समाजसेवी, बैंकर, दिव्यांगों, गरीबों, कुष्ठरोगियों की सेवा के साथ ही मानवता के हर काम में आगे बढ़कर सहयोग करने वाले व्यक्ति हैं.हरदिलअजीज, सभी को सम्मान देने के साथ ही छोटों को प्यार और बड़ों को सम्मान देने वाले हैं. बैंक में काम करते समय उनकी दूरदृष्टि का अनुभव अक्सर आता है.

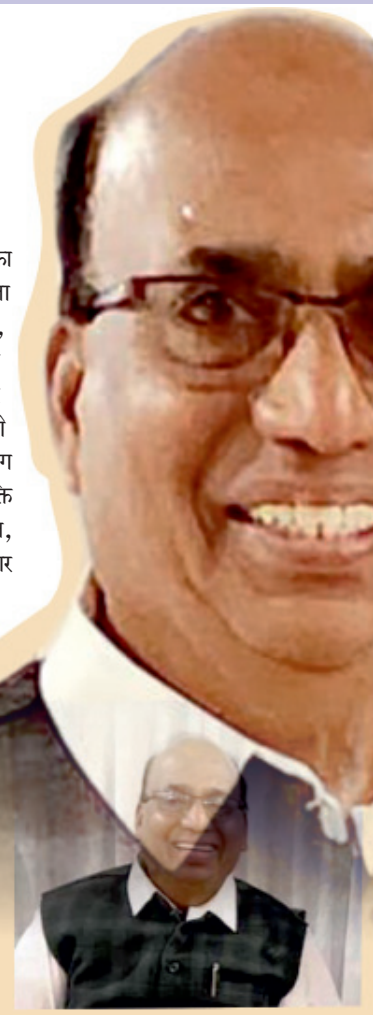

सहकारिता की आईना है अर्थसरिता

एड.विजय बोथरा
अध्यक्ष, अभिनंदन बैंक

भारतीय जैन संगठन के पदाधिकारी, अभिनंदन बैंक के प्रबंधन बोर्ड के अध्यक्ष के साथ ही अनगिनत संगठनों में सक्रिय होकर काम करने वाले सुदर्शन गांग की खूबियों पर किताब लिखी जा सकती है. वे जो भी करते हैं उसमें शतप्रतिशत से अधिक देते हैं. यही कारण है कि बैंक के रजत जयंती पर्व पर उनके द्वारा निकाली गई अर्थसरिता को राज्य में अपार सम्मान मिला है और सहकारिता क्षेत्र के साथ ही अमरावती के गौरव को बढ़ाने का कार्य इसमें किया गया है. इसका हर पन्ना जहां पठनीय है, वहीं सहकारिता क्षेत्र को किस तरह से बेहतरीन किया जा सकता है, इसका नमूना कहा जा सकता है.

अर्थसरिता को संवारने से लेकर उसे राज्यस्तर पर बेहतरीन बनाने में उनका कार्य केवल वही कर सकते हैं. हजारों मित्र परिवार उन्होंने बनाए हैं. सम्पन्नता में शालीनता, सादगी और विनम्रता की प्रतिमूर्ति सुदर्शनजी प्रेम, आत्मीयता के जहां परिचायक हैं, वहीं बोले तैसा चाले व्यक्तित्व हैं. उनका सानिध्य ही साथ रहने वाले को भी प्रभावित किए बगैर नहीं रहता है. काम के प्रति समर्पण कैसा होना चाहिए, यह उनसे सीखने लायक है. हर विषय का गहन अध्ययन, किसी की बात को ध्यान से सुनने और सदैव यथासंभव सामाजिक, मानवीय मदद के लिए तत्पर रहने वाले सुदर्शन गांग को उनके जन्मदिन पर करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

(पेज १ से आगे)

हर कार्य सदैव प्रेरणादाई रहता है. उन्हें जन्मदिन की कोटि-कोटि मंगलमय शुभकामनाएं दी. किसी बैठक की मिनिट्स से लेकर आमिर खान के पाणी फाउंडेशन के साथ जल स्तर बढ़ने के लिए किए गए प्रयास के दौरान जिस तरह से उन्होंने कार्य किया, इसकी जितनी सराहना की जाए कम है. उनकी महत्वपूर्ण खूबी यह है कि उन्हें जो भी जिम्मेदारी सौंपी जाती है उसे तन मन और धन के साथ जहां पूरा करते हैं उसमें किसी तरह की कमी नहीं रहने देते हैं. जीवन के ६७ वसंत पूरे कर २ फरवरी को ६८ में वर्ष में पदार्पण करने वाले हम सभी के चाहते सुदर्शन गांग को जन्मदिन की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें और सामाजिक कार्यों के माध्यम से राष्ट्र कार्य में इसी तरह योगदान देते रहें प्रभु चरणों में यही कामना.

सद्गुणों की खान हैं सुदर्शन गांग, सादगी में सम्पन्नता बेजोड़

जीवन में कुछ लोगों से पहली मुलाकात यादगार हो जाती है. ऐसे ही लोगों में शुमार है आदर्श समाजसेवी, बैंक पदाधिकारी और प्रेरणादायी वक्ता सुदर्शन गांग का. जीवन में मेरे जन्मदिन पर आयोजित कार्यक्रम में उनसे पहली बार मुलाकात का मौका मिला, उनकी सादगी, समझदारी, किसी की बात को सुनने वाली अदा के साथ ही अनगिनत खूबियों ने प्रभावित किया. बहुगुणी व्यक्तित्व के धनी जहां वे हैं, वहीं उनकी समझदारी और दूसरों को सम्मान देने वाली भावना निश्चित तौर पर उन्हें अपार सम्मान देने के लिए काफी है.

संघर्ष,सद्गुण, सम्पन्नता, सादगी,समर्पण के पांच एस उनकी यश पताका को जहां राष्ट्रीय स्तर पर चमका रहे हैं, वहीं दूसरी ओर बीजेएस रत्न से नवाजे गए सुदर्शनजी गांग पांच एस के साथ विनम्रता का वी भी अपने पास ही रखते हैं. यह विनम्रता उनके व्यक्तित्व को आसमानी उंचाई देने का काम करती है. उनकी आत्मीयता, अपनापन और सम्मान देने वाली अदा आज के दौर में दुर्लभ कहना गलत नहीं होगा. पर्यावरण संतुलन, धार्मिक कार्यक्रम हो, सामाजिक कार्यक्रम हो, उनकी सहभागिता के साथ सक्रियता युवाओं को भी शर्माने लायक होती है. आमतौर

प्राचार्य सुधीर महाजन
मो. नं.७५०६२८०३०७

पर दूसरों को अच्छाई बताने वाले बहुत रहते हैं लेकिन बताई गई अच्छाई का पालन अपने जीवन में करने वाले कम रहते हैं. उनका स्पष्ट मानना रहता है कि सामाजिक दायित्व, मानव सेवा की भावना सभी में होनी चाहिए. यह रहने पर समाज का एक सुंदर रूप सभी के सामने आता है.

बाबूजी की शालीनता ,आत्मीयता का ही यह असर है कि वे विधायक,सांसद नहीं रहने के बाद भी हजारों मित्र परिवार बनाए हैं. वे इंसानियत का धर्म सबसे बड़ा धर्म मानते हैं. यह बात उनके मार्गदर्शन में भी रहती है. संविधान विषय के विशेषज्ञ, अनगिनत किताबें पढ़ने वाले और आज भी पठन को अत्याधिक महत्व जहां देते हैं, वहीं दूसरी ओर उनका मानना है कि मानवता का धर्म सबसे बड़ा धर्म होना चाहिए. मानवता की सेवा के साथ ही बाबूजी पर्यावरण संतुलन, सत्य, अहिंसा के मामले में भी सदैव सतर्क रहते हैं. मानवता के साथ ही सेवाभाव जैसी खूबियां जहां रहती हैं, वहां खुशियां सदैव रहती हैं.बाबूजी के मुताबिक जीवन में प्रेम, आत्मीयता में चमत्कारिक ताकत होती है. इसलिए सदैव इन्हें देने का प्रयास करना चाहिए. आत्मीयता के सागर सुदर्शन गांग का व्यक्तित्व उस अथाह सागर जैसा है, जिसमें जितना डूबते जाएंगे, उतनी खूबियां सामने आएंगी. जन्मदिन पर हमारी करोड़ों मंगलमय शुभकामनाएं, वे दीर्घायु हों, स्वस्थ रहें, मस्त रहें, यही कामना.

मानव धर्म को सर्वोच्च मानने वाले बाबूजी

अमरावती संत-महात्माओं और महान हस्तियों की नगरी है. भारतीय जैन संगठन के पदाधिकारी और सेवाभाव के पर्याय के साथ ही जीवन में सदैव अच्छी सोच के साथ ही समाज के लिए दिन-रात विचार करने वाले और तत्परता से काम करने वाले व्यक्ति के रूप में बडनेरा निवासी और आनंद परिवार के सभी को आनंद देने के लिए ही जीवन समर्पित करने वाले सुदर्शन गांग का उल्लेख किया जा सकता है. मानवता की सेवा,दिव्यांग, कुष्ठरोगियों के साथ ही मानवता के हर काम में योगदान के लिए वे सदैव तत्पर रहते हैं. वे आत्मीयता और प्रेम के जितने सागर हैं, उतने ही वे समाजसेवा, मानवसेवा के लिए समर्पित व्यक्ती हैं. उनके व्यक्तित्व में नकलीपन कहीं भी नहीं रहता है. आज के दौर में लोग किसी की मामूली मदद करने के बाद गांव भर प्रचार करते हैं लेकिन कोरोना महामारी के दौरान हजारों लोगों की मदद करने वाले सुदर्शन गांग जीवन में कभी प्रचार के पीछे नहीं पड़ते हैं. उनका मानना रहता है कि प्रभु ने उन्हें किसी के लिए कुछ करने में समर्थ बनाया है, ऐसे में वे मानवता की सेवा का प्रयास

डॉ.गोविंद कासट

करते हैं. इसका आदर्श वे शहर में समाजसेवा के चलते-फिरते विश्वविद्यालय के रूप में स्थान रखने वाले डॉ. गोविंद कासट को मानते हैं. उनके मुताबिक उनके लिए वे ऐसे व्यक्ती हैं, जिनसे उन्हें प्रेरणा मिलती है. उम्र के इस मौड़ पर भी तीन दर्जन से अधिक विदेशों का दौरा करने के अलावा भारत के लगभग अधिकांश शहरों में पहुंचने वाले सुदर्शन गांग का सामाजिक काम अथाह है. दिव्यांगों के कल्याण तथा उनकी भलाई के लिए उनके द्वारा निरंतर कार्य जारी रहता है. दिव्यांग संस्थाओं की मदद की घोषणा करने वाले तो मंच से कई मिल जाएंगे लेकिन घोषणा के बाद तत्काल इसकी पूर्ति करने वाले समाजसेवी के रूप में अमरावती का नाम राष्ट्रीय स्तर पर चमकाने वाले और अभी तक अनगिनत देशों की यात्रा करने के साथ ही इसका अनुभव प्राप्त करने वाले बाबूजी आदर्श समाजसेवी, व्यवसायी के साथ ही दिव्यांगों की सेवा में समर्पित रहने वाले व्यक्ती हैं. उनका डॉ. नरेन्द्र भिवापुरकर अंध विद्यालय ही नहीं बल्कि कई अपंग, मूकबधिर, भारतीय अंधजन विकास परिषद सहित अन्यों से करीबी संबंध हैं.अपनापन, सामाजिक सोच, अनगिनत ख़ूबियों वाले सुदर्शन गांगजी को जन्मदिन की शुभकामनाएं, वे स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रभु चरणों में यही कामना.

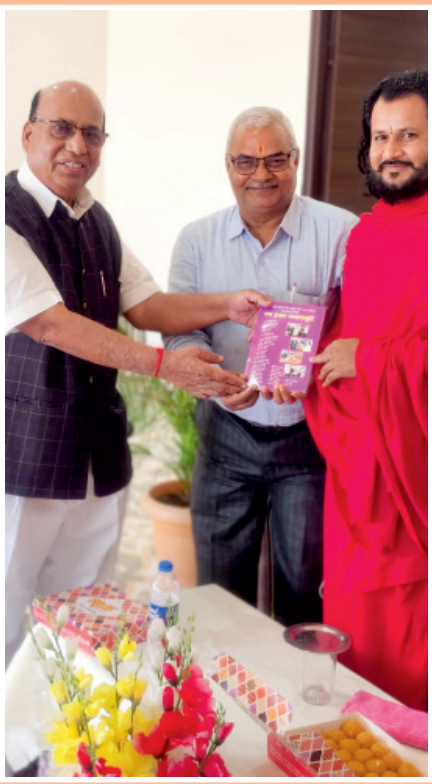

कर भला तो हो भला है जिनका सिद्धांत

जीवन में अच्छाई कभी बेकार नहीं जाती है. हमारा जैसा भाव होता है, उसी तरह देव हमें दिखाई देते हैं. बहुत कम लोग ऐसे होते हैं, जिनका व्यक्तित्व सभी में घुल-मिल जाता है और सभी के लिए प्रेरणा देने का काम करता है. सुदर्शन गांग ऐसे ही व्यक्तित्व हैं, जो जैसा बोलते हैं, वैसा ही करते हैं. वे कहते हैं कि कर भला तो हो भला हर व्यक्ति का सिद्धांत होना चाहिए. इससे उसके भी जीवन में खुशी मिलती है और अन्यों के जीवन में भी खुशी मिलती है.

सकारात्मक सोच का जीवन में अत्याधिक महत्व रहता है. यही कारण है

प्रा.डॉ.अजय बोंडे
मो. नं.९४२२८९२९८०

कि कहते हैं कि मन के हारे हार है, मन के जीते जीत. यानी आपकी हार-जीत का संबंध आपकी मानसिकता और सोच पर रहता है. राष्ट्रीय स्तर पर अनगिनत पुरस्कार प्राप्त कर अमरावती का गौरव बढ़ाने वाले बहुगुणी व्यक्तित्व सुदर्शन गांग ऐसे ही व्यक्तित्व हैं. उनकी सादगी, आत्मीयता, सभी को प्रेम देने तथा यथासंभव सहयोग देने वाली मानसिकता ही उनकी महानता की परिचायक है. एक बार उनसे मिलने वाला व्यक्ति उनका होकर रह जाता है. उनका व्यक्तित्व किसी को भी प्रभावित करने की ताकत रखता है. उनकी आत्मीयता, दूसरों को सम्मानित करने वाली अदा ही जुदा है. सामाजिक, शैक्षिक, साहित्यिक गतिविधियों में सदैव योगदान देने के साथ ही इसे प्रोत्साहित करने का काम करते हैं. जीवन में एस का अत्याधिक महत्व रहता है.बडनेरा के सम्यक सदन निवासी समाजसेवी सुदर्शनजी गांग. उन्हें सब कुछ सहज ही नहीं मिला है. संघर्ष को सफलता का पहला पायदान जहां वे मानते हैं, वहीं दूसरी ओर सामाजिक दायित्व की भावना बाबूजी में कूट-कूटकर भरी है. यही कारण है कि जहां वे अमरावती जिले ही नहीं बल्कि विदर्भ तथा राज्य के लिए भूषण से कम नहीं हैं, वहीं लाखों मित्र परिवार बनाए हैं.

अपनत्व के सागर हैं भाऊ

अरुण भाऊ कडू ने बताई खूबियां

भारतीय जैन संगठन के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर आपदा प्रबंधन, गरीब आदिवासी बच्चों को बेहतरीन शिक्षा दिलाने के साथ अन्य सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में अग्रणी सुदर्शन गांग सुलझे हुए व्यक्तित्व हैं. बहुगुणी व्यक्तित्व के जहां में धनी है वहीं दूसरी ओर अपने से अधिक दूसरों की भावनाओं को समझने वाले व्यक्ति हैं. अपनापन जहां भरा हुआ है वहीं बिना किसी लाग लपेट के अपनी बात मजबूती से रखने की उनकी कला सराहनीय है. आनंद परिवार के प्रमुख के रूप में जहां उनकी व्यावसायिक कुशलता को सीखा जा सकता है वहीं सहयोगियों तथा कर्मचारियों को किस तरह सम्मान देते हुए उनसे बेहतरीन कार्य करवाया जा सकता है, इस विषय में जैसे उन्होंने पीएचडी कर ली हो. आनंद परिवार की प्रगति के साथ सहकारिता क्षेत्र में अभिनंदन बैंक के मुख्य प्रवर्तक के रूप में उनका ही प्रयास है कि आज सभी को साथ लेकर जहां चलते हैं वहीं अध्यक्ष एडवोकेट विजय बोथरा के कुशल नेतृत्व में आज यह बैंक राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार प्राप्त कर आगे बढ़ रही है. किसी भी काम को छोटा नहीं समझने वाले सुदर्शन जी मान- अपमान से पड़े व्यक्ति हैं. संघर्ष से सफलता का सूत्र उनसे आसानी से सीखा जा सकता है. सफलतम समाजसेवी, आनंद परिवार के रूप में सफल व्यवसायी, भारतीय जैन संगठन के माध्यम से पर्यावरण, जल है तो कल है, पौधारोपण के साथ कई क्षेत्रों में बेहतरीन काम करने के कारण उन्हें बहुगुणी व्यक्तित्व कहना गलत नहीं होगा. पिछले कई वर्षों से उनका जन्मदिन सेवा दिन के रूप में मनाया जाता है. गौ माता की सेवा, दिव्यांग विद्यालयों की मदद, बडनेरा के निराधार बुजुर्ग लोगों के लिए राहत केंद्र को निरंतर मदद सहित हर नेक काम में यथासंभव सहयोग देने के लिए तत्पर रहते हैं. कर भला तो हो भला के सिद्धांत को उन्होंने जीवन भर अपनाया है और अन्य को भी प्रेरित करते हैं. २ फरवरी को उनके जन्मदिन पर मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

आसमानी ऊंचाई रखने वाले व्यक्ति हैं बाबूजी

सुदर्शन गांग के जन्मदिन २ फरवरी पर विशेष

जीवन में भक्ति, शक्ति और विद्वता का संगम बहुत कम लोगों के भाग्य में होता है. लेकिन जिनके भाग्य में होता है उनका कार्य कई दशकों तक चलता है और उनका नाम सदैव कामयाबी की बुलंदी के साथ मानवता की सेवा के लिए भी जाना जाता है. ऐसे लोग परमार्थी होते हैं और स्वयं से अधिक लोगों का सोचते हैं और मदद करते हैं. ऐसे ही लोगों में शामिल हैं बडनेरा निवासी और हजारों लोगों का मित्र परिवार बनाने वाले, विनम्र स्वभाव के साथ मानवता की अलख जगाते हुए जरूरतमंदों की मदद में सक्रिय रहने वाले समाजसेवी सुदर्शन जी गांग. बचपन के संघर्ष से लेकर आज कामयाबी की ऊंचाई पर पहुंचने के बाद भी उनकी सादगी किसी को भी बिना प्रभावित किये नहीं रहती है. सदैव सकारात्मक सोच रखने वाले और अन्य को भी इसके लिए प्रेरित करने वाले व्यक्ति के रूप में उनसे पिछले २० साल के दौरान परिचय में बहुत कुछ सीखने का जहां मौका मिला वहीं अच्छे काम को कोई किस तरह प्रोत्साहित कर सकता है इसका अनुभव करीब से आया. उनका निर्मल, निश्चल, निःस्वार्थ स्वभाव सदैव मेरे लिए सम्माननीय रहा है.

आनंद परिवार के माध्यम से जहां उन्होंने व्यवसाय के क्षेत्र में कामयाबी के बुलंदी हासिल की है और आज कई लोगों को रोजगार देने का पवित्र कार्य किया है, वहीं हमेशा प्रसन्नचित उनका चेहरा उम्र को कभी उन पर हावी नहीं होने देता. कई देशों की यात्रा करने के साथ भारत रत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर चरित्र अभ्यासक, भारतीय संविधान के बेहतरीन वक्ता, सर्वधर्म समभाव को प्रोत्साहित करने वाले व्यक्ति, प्रेरणादाई वक्ता और सभी में बाबूजी के रूप में लोकप्रिय उनके व्यक्तित्व को शब्दों में नहीं समेटा जा सकता है. उनकी पठनशीलता का अंदाज इसी बात से लगाया जा सकता है कि उनके घर में जहां संतों की सेवा और उनके सत्संग के लिए पूरा एक मंजिल खाली है और हर महीने किसी न किसी संत के चरण उनके घर पर पड़ते हैं वहीं ज्ञान के लिए उनकी शानदार लाइब्रेरी बड़ी से बड़ी लाइब्रेरी को मात देने की ताकत रखती है. इसका बेहतरीन नियोजन करने के साथ उनके लाइब्रेरी में रखी गई लगभग ४००० किताबें उन्होंने स्वयं पढ़ी है. वे कहते हैं कि किताबों से बड़ा मित्र कोई नहीं हो सकता है. इतना ही नहीं तो उन किताबों के सारांश भी निकाल कर रखे हैं. हर धर्म की जहां उन्हें जानकारी है वहीं दूसरी ओर वह कहते हैं कि किताबों से बड़ा साथी जीवन में दूसरा नहीं हो सकता. बच्चों को बेहतरीन किताबें पढ़ने की आदत डालने की सलाह देते हैं. किसी की बात को ध्यान से सुनना और उसके बाद अपनी बात को विनम्रता पूर्वक सुनने की उनकी खूबी किसी को भी प्रभावित करती है.भारत रत्न मदर टेरेसा के व्यक्तित्व से जहां हुए प्रभावित हैं, वहीं उनके सेवा कार्यों की छाप बाबूजी पर दिखाई देती है. मदर टेरेसा के अंतिम संस्कार में शामिल होने के लिए वह कोलकाता गए थे. पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम के व्यक्तित्व ने उन्हें सदैव प्रभावित किया. यही कारण है कि उनकी किताबों के साथ ही उनके भाषणों को जहां उन्होंने सुना है, वहीं डॉक्टर कलाम के इंतकाल की खबर ने उन्हें दुखी कर दिया था. वह रामेश्वरम में डॉक्टर कलाम की अंतिम यात्रा में सहभागी हुए थे.पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के विचारों से सदैव प्रभावित रहे. उनकी अंतिम यात्रा में भी उन्होंने सहभागी लिया.इसके साथ ही टीवी पर चलने वाली विभिन्न विषयों की वह फिर चाहे राजनीतिक हो, धार्मिक हो, ऐतिहासिक हो, जनसमस्याओं से जुड़ी हो, देखना,सुनना उन्हें अत्याधिक पसंद है.

पर्यावरण से अपार प्रेम

सामाजिक सेवा भाव, धार्मिकता से ओतप्रोत रहने वाले बाबूजी का कहना है कि प्रकृति और पर्यावरण हमें जी भर कर देते हैं. लेकिन इसके बाद भी हम उनका जिस तरह से दोहन करते हैं यह उचित नहीं है. बिना जल के हम कभी जिंदा भी नहीं रह सकते. घटते जल स्तर को बढ़ाने के लिए अभिनेता आमिर खान के पाणी फाउंडेशन में सक्रिय सहभागिता से लेकर जलस्तर बढाने लिए भारतीय जैन संगठन के प्रमुख शांतिलालजी मुथा के मार्गदर्शन में चलाए गए अभियान में सक्रिय सहभाग लिया. देश में भूकंप जैसी आपदा आने पर मदद के लिए संगठन के प्रयासों में पूरी ताकत के साथ न केवल सहयोग देते हैं बल्कि स्वयं अग्रिम पंक्ति में रहते हैं. सेवाभावी संगठनों में भारतीय जैन संगठन और इसके संस्थापक अध्यक्ष शांतिलालजी मुथा को अपना प्रेरणास्थान मानते हैं. साथ ही कहते हैं कि ऐसे संगठन का हिस्सा होने पर वे सदैव गर्व की अनुभूति करते हैं. किसी भी अच्छे काम के लिए सदैव तत्पर रहने वाले, बहुगुणी व्यक्तित्व बाबूजी को जन्मदिन २ फरवरी पर विदर्भ स्वाभिमान की करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. आप स्वस्थ रहें, मस्त रहें और सभी को आपका मार्गदर्शन मिलता रहे, प्रभु गोविंदा के चरणों में यही कामना.

अनुकरणीय आदर्श व्यक्तित्व हैं सुदर्शन गांग

शहर ने कई समाजसेवियों के साथ ही सेवाकार्य का इतिहास रचने वाले लोगोंका परिचय पूरे प्रदेश तथा देश को कराया है. अंबानगरी ही नहीं तो अपने कार्यों से पूरे राज्य तथा देश में अपार सम्मान रखने वाले, भारतीय जैन संगठन के माध्यम से देशभर में सेवा तथा समाज कार्य करने वाले सुदर्शन गांग ऐसे ही व्यक्ति हैं. सादगी, विनम्रता के साथ ही सेवाभाव को उनका समर्पण हम सभी के लिए प्रेरणा का काम करता है. उन्हें जन्मदिन पर मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

वे ऐसे व्यक्ती हैं, जिनसे उन्हें प्रेरणा मिलती है. उम्र के इस मोड़ पर भी दर्जन से अधिक विदेशों का दौरा करने के अलावा भारत के लगभग अधिकांश शहरों में पहुंचने वाले सुदर्शन गांग का सामाजिक काम अथाह है. किसी भी काम में शतप्रतिशत देने की उनकी खूबी निश्चित ही सराहनीय है. गरीबों, आदिवासियों के कल्याण की बात हो

अथवा तपोवन के कुष्ठ रोगियों की मदद, कोई धार्मिक गतिविधि में सहयोग, यथासंभव सक्रिय रहते हैं और सदैव मदद करने का भाव रखते हैं. उनके कार्यों के कारण अभी तक दर्जनों

चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया
मो. नं.९५८८८११११११

पुरस्कार प्राप्त किया है.

दिव्यांगों के कल्याण तथा उनकी भलाई के लिए उनके द्वारा निरंतर कार्य जारी रहता है. दिव्यांग संस्थाओं की मदद की घोषणा करने वाले तो मंच से कई मिल जाएंगे लेकिन घोषणा के बाद तत्काल इसकी पूर्ति करने वाले समाजसेवी के रूप में अमरावती का नाम राष्ट्रीय स्तर पर चमकाने वाले और अभी तक अनगिनत देशों की यात्रा करने के साथ ही इसका अनुभव प्राप्त करने वाले बाबूजी आदर्श समाजसेवी, व्यवसायी के साथ ही दिव्यांगों की सेवा में समर्पित रहने वाले व्यक्ती हैं. उनका डॉ. नरेन्द्र भिवापुरकर अंध विद्यालय ही नहीं बल्कि कई अपंग, मूकबधिर, भारतीय अंधजन विकास परिषद सहित अन्यों से करीबी संबंध हैं.अपनापन, सामाजिक सोच, अनगिनत ख़ूबियों वाले सुदर्शन गांगजी को जन्मदिन की शुभकामनाएं.

ब्रह्माकुमारी उषा दीदी के हाथों प्रभु उपहार भवन का भव्य उद्घाटन

परमार्थ शुभकामनाएँ, आशीर्वाद जमा करने का आसान तरीका

विदर्भ स्वाभिमान, २९ जनवरी

अमरावती- परमार्थ सदैव शुभकामनाएँ और आशिर्वाद जमा करने का तरीका होता है. जो लोग इस पर चलते हैं, उन्हें दुनिया सदैव याद रखती है. इस आशय की बात ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र मोर्शी द्वारा अंतरराष्ट्रीय वक्ता राजयोगिनी उषा दीदी, अमरावती जिला संचालिका राजयोगिनी सीतादीदी एवं गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति में प्रभु उपहार भवन का बड़े हर्षोल्लास के साथ उद्घाटन करने पश्चात किया गया. इसमें समाजसेवी चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया की महत्वपूर्ण भूमिका की सराहना कर उन्हें आशिर्वाद दिया.

मूलनिष्ठ समाज निर्माण के लिए ब्रह्माकुमारी मोर्शी शाखा के माध्यम से सेवा विस्तार के लिए भवन का उद्घाटन करते हुए उषा दीदी ने दुआओं का महत्व विषय पर बोलते हुए कहा कि सुखी जीवन जीने के लिए आशीर्वाद बहुत जरूरी है. अगर आपके पास पैसे नहीं हैं तो भी आप ऐसा कर सकते हैं. लेकिन आप दूसरों को खुश कर सकते हैं. आप अच्छी भावनाएं, खुशी, प्यार, दया, कृपा, साहस मुफ्त में दे सकते हैं. इसके

लिए आपको कुछ भी खर्च करने की जरूरत नहीं है, कुछ भी त्याग करने की जरूरत नहीं है, आपको बस जीवन में संतुलन बनाए रखना है. श्रेष्ठ कर्म के माध्यम से हम अपने जीवन में लिंक का खाता जमा कर सकते हैं. हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जीवन में पैसा कमाने के साथ-साथ हम पर समाज का भी कुछ कर्ज़ होता है. मृत्यु के बाद हम नश्वर संसार में कुछ भी अपने साथ नहीं ले जा सकते हैं, लेकिन हम निश्चित रूप से अपने द्वारा बनाए गए सर्वोत्तम कर्मों और संबंधों को अपने साथ ले जा सकते हैं. जैसे हम किसी बीमा पॉलिसी का प्रीमियम भरते हैं, वैसे ही हमें अपने पास मौजूद धन और शक्ति का उपयोग समाज के लाभ के लिए करना चाहिए. इसका मतलब है कि हमें सुखी जीवन के लिए प्रीमियम का भुगतान करना होगा. अपने विचार इस अवसर पर व्यक्त किये. इस समय

समाजसेवी चंद्रकुमार जाजोदिया के परमार्थ कार्यों को सराहा

है. सोपान कानेरकर महाराज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान ही इस धरती को स्वर्ग बना सकता है.

श्री चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया प्रसिद्ध समाज सेवक ने इस कार्य को निरंतर सहयोग करने का श्रेष्ठ संकल्प किया. भवन निर्माण के लिए जिन लोगों ने सहयोग दिया उन सभी का सम्मान एवं सत्कार भी किया गया.इस समय आद.इंद्रा दीदीजी, बिन्दु दीदीजी, बी के राजेश भाई,सौ.कंचन अंगनानी,साहेबराव खानेकर, डॉ. दीपक ढोले, डॉ. किरण कुराडे, मोहन मगाडे, विजय लड्ढा, प्रकाश राठी, पत्रकार अजय पाटिल सहित ब्रह्माकुमारी सेवा केंद्र के तालुका निदेशक और कई अनुयायी उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन मोर्शी सेवा केंद्र निदेशक परीदीदी ने किया और धन्यवाद ज्ञापन जयादीदी ने किया.

सभी विश्व रिकॉर्ड हुए ध्वस्त

महाकुम्भ में पहले दो दिनों में ५.१५ करोड़ लोगों ने स्नान किया. पहले दिन १.६५ करोड़ और मकर संक्रांति के दिन ३.५० करोड़ लोगों ने महाकुम्भ स्नान किया.

सबसे ख़ास बात जानते हैं?

ना किसी से जात, धर्म नागरिकता पूछी गई.....ना किसी की बुराई की गई... ना किसी और धर्म को नीचा दिखाया गया.....

दुनिया भर से गरीब अमीर, देशी विदेशी..... हर तरह के भक्त आये..... अपना धर्म निभाया और सबने आनंद लिया.

इतने करोड़ों लोगों के लिए भोजन-पानी आदि की व्यवस्था... रहने का इंतजाम भी है प्रयागराज में....लाखों के लिए तो एकदम मुफ्त भी है..... लेकिन कोई हल्ला नहीं मचा रहा.. कोई क्रेडिट की तख्ती नहीं लटका रहा.

दुनिया में कहीं भी ऐसा उदाहरण आपको नहीं मिलेगा.....

तीर्थों के राज... प्रयागराज का यह महाकुम्भ अलौकिक है...अविस्मरणीय है.....अकल्पनीय है.

तिरुपति बालाजी मंदिर का इतिहास, रहस्य और कुछ खास बातें

भारत को मंदिर का देश यूं ही नहीं कहा जाता, कुछ तो बात है यहां के मंदिरों में..., जो हजारों किमी. दूर से लोगों को अपनी श्रद्धा और भक्ति के कारण आकर्षित करती हैं। यहां हजारों ऐसे मंदिर है, जिनका अपना एक इतिहास और रहस्य है, जिनसे आज तक न कोई पर्दा उठा सका और शायद किसी के बस की बात भी नहीं है। इन्हें में से एक है आंध्र प्रदेश में स्थित तिरुपति बालाजी मंदिर...।

आंध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में तिरुमला पर्वत पर स्थित यह मंदिर भारत के सबसे प्रमुख व पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक है। इसके अलावा यह भारत के सबसे अमीर मंदिरों में से एक भी है। चमत्कारों व रहस्यों से भरा हुआ यह मंदिर न सिर्फ भारत में बल्कि पूरे विश्व में जाना जाता है। इस मंदिर के मुख्य देवता श्री वेंकटेश्वर स्वामी है, जो स्वयं भगवान विष्णु के अवतार माने जाते हैं और तिरुमाला पर्वत पर अपनी पत्नी पद्मावती के साथ निवास करते हैं।

तिरुपति बालाजी मंदिर में केश-दान की परम्परा मान्यताओं के मुताबिक, जिन भक्तों की मनोकामनाएं पूरी हो जाती है, वे मंदिर में आकर वेंकटेश्वर स्वामी को अपना बाल समर्पित (दान) करते हैं। दक्षिण में होने के बावजूद इस मंदिर से पूरे देश की आस्था जुड़ी है। यह प्रथा आज से नहीं बल्कि कई शताब्दियों से चली आ रही है, जिसे आज भी भक्त काफी श्रद्धापूर्वक मानते आ रहे हैं। इस मंदिर की खासियत यह है कि यहां न सिर्फ पुरुष अपने बाल का दान करते हैं बल्कि महिलाएं व युवतियां भी भक्ति-भाव से अपने बालों का दान करती हैं।

तिरुपति में केश दान करने के पीछे की कहानी क्या है? पौराणिक किवदंती के अनुसार, प्राचीन समय में भगवान तिरुपति बालाजी की मूर्ति पर चीटियों ने बांबी बना ली थी, जिसके कारण वह किसी को दिखाई नहीं देती थी। ऐसे में वहां रोज एक गाय आती और अपने दूध से मूर्ति का जल-अभिषेक कर चली जाती। जब इस बात का पता गाय मालिक को चला तो उसने गाय को मार दिया, जिसके बाद मूर्ति के सिर से खून बहने लगा। इस पर एक महिला ने अपने बाल काटकर बालाजी के सिर पर रख दिया। इसके बाद भगवान प्रकट हुए और महिला से कहा, यहां आकर जो भी मेरे लिए अपने बालों का त्याग करेगा, उसकी हर इच्छा पूरी होगी। तभी से ये केश-दान की परंपरा चली आ रही है।

पौराणिक मान्यताओं की मानें तो भगवान विष्णु ने कुछ समय के लिए स्वामी पुष्करणी नामक सरोवर के किनारे निवास किया था। यह सरोवर तिरुमाला के पहाड़ी पर स्थित है। इसीलिए तिरुपति के चारों ओर स्थित पहाड़ियां शेषनाग के सात फनों के आधार पर बनीं मससगिरिफकहलाती हैं। श्री वेंकटेश्वरैया का यह मंदिर सप्तगिरि की सातवीं पहाड़ी पर स्थित है, जो वेंकटाद्री नाम से भी जाना जाता है। कहा जाता है कि मंदिर में स्थित प्रभु की प्रतिमा किसी ने बनाई नहीं है बल्कि ये स्वयं ही उत्पन्न हुई है। तिरुपति बालाजी मंदिर का इतिहास तिरुपति बालाजी मंदिर को मटेम्पल ऑफ सेवन हिल्सफभी कहा जाता है। इस मंदिर का निर्माण करीब तीसरी शताब्दी के आसपास में हुआ है, जिसका समय-समय अलग-अलग वंश के शासकों द्वारा जीर्णोद्धार कराया गया है। ५वीं शताब्दी तक यह मंदिर सनातनियों का प्रमुख धार्मिक केंद्र बन चुका था। कहा जाता है कि इस मंदिर की उत्पत्ति वैष्णव संप्रदाय ने की थी। ९वीं शताब्दी में कांचीपुरम के पल्लव शासकों ने यहां कब्जा कर लिया था। इस मंदिर के ख्याति प्राप्त करने की बात की जाए तो १५वीं शताब्दी के बाद इस मंदिर काफी प्रसिद्धि मिली, जो आजतक बरकरार है। तिरुपति बालाजी मंदिर की कहानी कहा जाता है कि एक बार भगवान विष्णु अपनी पत्नी लक्ष्मी के साथ क्षीर सागर में अपने शेषशैय्या पर विश्राम कर रहे थे, तभी वहां भृगु ऋषि आए और उनके छाती पर एक लात मारी। इस पर क्रोधित न होकर विष्णु जी ने भृगु ऋषि के पांव पकड़ लिए और पूछा कि ऋषिवर आपके पैरों में चोट तो नहीं लगी। लेकिन लक्ष्मी जी को ऋषि का यह व्यवहार पसंद नहीं आया और वे क्रोधित होकर बैकुंठ छोड़कर चली गई और पृथ्वी पर पद्मावती नाम की कन्या के रूप में जन्म लिया। इस पर भगवान विष्णु ने अपना रूप बदल वेंकटेश्वर के रूप में माता पद्मावती के पास पहुंच गए और विवाह का प्रस्ताव रखा, जिसे देवी ने स्वीकार कर लिया और फिर दोनों की शादी हो गई।

विशेषांक संपादकीय सहयोग

विशेष मार्गदर्शक- चंद्रकुमार उर्फ लप्पी भैय्या जाजोदिया

विशेष सहयोग – डॉ.गोविंद कासट, प्राचार्य डॉ. सुभाष गवई, अरुण कडू, प्रा.डा. अजय बोंडे, दिपेंद्र मिश्रा, सौ. मिना दिपेंद्र मिश्रा, प्राचार्य संजय शिरभाते, प्राचार्य सुधीर महाजन, ॲड. विजय बोथरा, डॉ. रामगोपाल तापडिया, डॉ. राजू डांगे, प्रदीप जैन, नानकराम नेभनानी, गौरी अय्यर, गणेश अय्यर एवं असंख्य मित्र परिवार, सुदर्शन गांग मित्र मंडल, डॉ. गोविंद कासट, मित्र मंडल अमरावती.

महाकुंभ-२०२५

महाकुंभ, (प्रयागराज)२०२५ कुंभ मेला जिसे २०२५ महाकुंभ के रूप में भी जाना जाता है, उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में गंगा, यमुनाऔर सरस्वती नदियों के संगम स्थल पर आयोजित किया जा रहा है।

भारतवर्ष में कुंभ मेले का आयोजन एक आदिकाल से चली आ रही संस्कृति है। कुंभ मेले के आयोजन की अपनी एक अलग ही छवि बनाती है। ऐसा माना जाता है कि जब देवताओं और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया तब समुद्र मंथन से अमृत की प्राप्ति हुई। कहा जाता है कि उसी अमृत की बूंदें पृथ्वी के चार स्थानों में गिरी जो, नासिक, उज्जैन, प्रयागराज और हरिद्वार हैं श्र तब से ही यहां कुंभ मेले का आयोजन प्रारम्भ हुआ। यह चारों स्थान आदिदेव महादेव के अलग अलग स्वरूपों के लिए प्रसिद्ध हैं। कुंभ मेले तीन प्रकार के होते हैं, पहले वो जो हर ६ वर्ष में आयोजित होते हैं अर्द्धकुंभ कहलाते हैं, दूसरे जो हर १२ वर्ष में आयोजित होते हैं पूर्ण कुंभ कहलाते हैं और तीसरा यानी महाकुंभ हर १४४ वर्ष ३ में आयोजित होता है। जो इस वर्ष १३ जनवरी २०२५ से प्रारम्भ होगा और २६ फरवरी २०२५ तक आयोजित रहेगा। महाकुंभ मेले का आयोजन अन्य तीन धामों पर भी होता है जो इस प्रकार हैं हरिद्वार,उज्जैन और नासिक.

महाकुंभ मेला, जो राक्षसों पर देवताओं की जीत का प्रतीक है, २०२५ में १३ जनवरी २०२५ से शुरू होकर २६ फरवरी २०२५ तक एक बार १२ साल के आयोजन के रूप में आयोजित किया जाएगा। यह आयोजन प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक शहरों में आयोजित किया जाएगा, और यह हर १२ साल में आयोजित किया जाता है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि देवताओं और राक्षसों के बीच अमृत की लड़ाई १२ साल तक चली थी। मेला क्षेत्र में गतिविधियाँ उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा गठित मेला प्रशासन अधिकारियों द्वारा अखाड़ों को भूमि आवंटन के साथ शुरू हुईं।

आगंतुक- महाकुंभ २०२५ मेले में ४०० मिलियन आगंतुकों के भाग लेने की उम्मीद है और इसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, इज़राइल, फ्रांस और कई अन्य देशों से गणमान्य व्यक्ति शामिल होंगे।

प्रयागराज महाकुंभ में संगम तट जनवरी २८, २०२५ और जनवरी २९, २०२५ (मंगलवार और बुधवार) की आधी रात को हुई भगदड़ में ३५ से ४० लोग मारे गए हैं। हादसे के १७ घंटे बाद उत्तर प्रदेश सरकार ने ३० लोगों की मौत की पुष्टि की।

महाकुंभ भगदड़ के बाद कड़े फैसले, अमृत स्नान के दिन वीआईपी के आने पर रोक

प्रयाराज महाकुंभ हादसे के बाद डीजीपी प्रशांत कुमार और मुख्य सचिव मनोज सिंह गुरुवार को घटनास्थल पर पहुंचे. भगदड़ के बाद सरकार ने अमृत स्नान के दिन किसी भी वीआईपी के आने पर रोक लगा दी है. कुंभ मेला में सभी वाहनों पर पाबंदी लगा दी गई है. न्यायिक आयोग शुक्रवार को कुंभ मेला क्षेत्र में पहुंचेगी.

महाकुंभ मेला में भगदड़ के एक दिन बाद गुरुवार को भी भारी भीड़ पहुंची और करीब दो करोड़ लोगों ने संगम स्नान किया. कुंभ में अब तक करीब २९ करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं. वहीं डीजीपी प्रशांत कुमार और मुख्य सचिव मनोज सिंह भी घटनास्थल पर पहुंचे और हादसे की वजहों को जाना. न्यायिक आयोग की टीम भी कल यहां पहुंचेगी. सरकार ने मौनी अमावस्या पर हादसे से सबक लेते हुए अमृत स्नान के दिन वीआईपी मूवमेंट पर रोक लगा दी है. बाहरी वाहन भी कुंभ मेला क्षेत्र में नहीं आ पाएंगे.